3

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण कुछ मुद्दे

रिद्धि सूद*
अनीता रस्तोगी**

बच्चों के सर्वोत्तम विकास के लिए जीवन के प्रारंभिक वर्षों में उन पर उचित ध्यान देना और उनकी देखभाल करना आवश्यक है। स्कूल में एक देखभाल भरा, पुष्टिकर, प्रगतिशील और समावेशी वातावरण हमारे नन्हे बच्चों के विकास और सीखने के सफ़र में उनकी सहायता करेगा। प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा (ईसीसीई) में उचित निवेश करने से सभी बच्चों के लिए सर्वोत्तम प्रारंभिक शिक्षा को पाना संभव हो पाएगा। यह उन्हें उम्रभर शिक्षा प्रणाली में पूर्ण रूप से सम्मिलित होने और उन्नत होने की सही शुरुआत देगा। इसलिए, विशेष रूप से बच्चों की गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा के लिए शिक्षकों को सशक्त, ज्ञानवान, उचित शैक्षणिक रणनीतियों का उपयोग करने में कुशल और सिखाने के लिए सकारात्मक माहौल उत्पन करने में सक्षम बनाने की आवश्यकता है। यह शिक्षकों की तैयारी का अभिन्न अंग है, जिस पर ध्यान देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं शिक्षकों की तैयारी से जुड़े कुछ मुद्दों पर चर्चा की गई है।

© NCERT not to be republished

बच्चों को जीवन भर सीखने और पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए एक सुदृढ़ आधार देना महत्वपूर्ण है। देखा जाए तो इसका बोध हमें बच्चों को लेकर हमारी बदलती अवधारणाओं के कारण हुआ है। असल में यह समझा जा सकता कि "बचपन अपने आप में एक जैविक अवस्था नहीं है, लेकिन एक सामाजिक रूप से निर्मित अवधारणा है जिसे हाल के वर्षों में काफी तेज़ी से तोड़ा और पुननिर्मित किया गया है" (मॉस, 2006)। बच्चों को समाज की सोच दर्शाते सामाजिक अभिनेता, सामाजिक एजेंट और नागरिक के रूप में देखा जाता है। 'बच्चे' की इस अवधारणा के कारण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) को "उनके एक अधिकार के रूप में माना जाता है और इसके साथ इसकी सेवाओं की गुणवत्ता को विकसित करने पर ज़ोर दिया जाता है" (डिपार्टमेंट ऑफ़ हेल्थ एंड चिल्ड्रन, 2000)। इसके लिए बच्चों के जीवन के प्रारंभिक आठ वर्षों को गंभीरता से देखना आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) को स्कूली शिक्षा के संस्थापक चरण (यानी पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के तीन साल और कक्षा 1 और 2) के रूप में देखती है। ये

* *शोधार्थी*, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली
** *प्रोफ़ेसर*, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नयी दिल्ली

बच्चे के जीवन के शुरुआती वे बहुमूल्य पाँच साल हैं जिनके दौरान उनकी देखभाल करना और उन्हें उचित प्रोत्साहन देने की आवश्यकता होती है। ऐसे में हमारा ध्यान शैक्षिक सफलता के महत्वपूर्ण कारक यानी की हमारे स्कूली शिक्षकों पर होना चाहिए। इस कारण से यह समझना महत्वपूर्ण है कि अंततः शिक्षकों की उत्कृष्ट शिक्षा, प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास कक्षाओं में शैक्षणिक गुणवत्ता और अंततः बच्चे के परिणामों को प्रभावित करेगा।

ईसीसीई में पेशेवर रूप से प्रशिक्षित और योग्य शिक्षकों की आवश्यकता

विकासवादी सिद्धांतकारों ने छोटे बच्चों के समग्र विकास को उचित आधार देने के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया है। वायगोत्स्की का सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धांत इस बात पर प्रकाश डालता है कि छोटे बच्चे प्रशिक्षित वयस्कों (जैसे शिक्षकों या माता-पिता) के उचित प्रोत्साहन से सीखते हैं और अपनी क्षमता को प्राप्त करते हैं। एक प्रशिक्षित शिक्षक छोटे बच्चों के विकास को सही दिशा देने के लिए बेहतर स्कैफ़ोल्डिंग नीतियों की व्यवस्था कर सकता है (वूलफ़ॉक, 2008)। जीन पियाजे के सिद्धांत ने उन शिक्षकों की काबिलियत को महत्व दिया है, जो कक्षाओं में शिक्षण के लिए बाल-केंद्रित दृष्टिकोणों या तरीकों को फलित करने में प्रशिक्षित हैं। ऐसे शिक्षक सीखने के माहौल को व्यवस्थित करने में सक्षम होते हैं। वे छोटे बच्चों को नई खोजी गई कार्यनीतियों का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करने के साथ दुनिया को समझने के उनके अपने तरीकों को चुनौती देने की संभावना बनाते हैं। इस तरह बच्चे स्वयं अपने वातावरण को समझना व नई परिस्थितियों में स्वयं को ढालना सीखते हैं। इसी तरह बेन्डुरा का सामाजिक अधिगम सिद्धांत कक्षा के आचरण से संबंधित उचित व्यवहार के प्रतिरूपण के लिए शिक्षकों पर महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी डालता है। प्रशिक्षित शिक्षक कक्षा के वातावरण को इस तरह से व्यवस्थित करने में सक्षम है जो छोटे बच्चों को सीखने और कक्षा से जुड़ा हुआ महसूस करवाने हेतु प्रेरित करता है (फेम, 2014)। ईसीसीई शिक्षकों के व्यवसायिक प्रशिक्षण से उन्हें शिक्षार्थियों की ज़रूरत के अनुरूप होने में मदद मिलती है और वह यह समझ पाते हैं कि छोटे बच्चों को अच्छी तरह से खाना, आराम करना, और स्वयं को कक्षा का हिस्सा महसूस करना चाहिए (डीआज़-रीको, 2009)।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संचालित नेशनल अचीवमेंट सर्वे 2018 की रिपोर्ट के अनुसार उच्च प्रदर्शन करने वाले राज्यों में 73 प्रतिशत विद्यार्थियों ने प्री-प्राइमरी स्कूलों में भाग लिया है। इसका अर्थ है कि भारत को प्रारंभिक शिक्षा को समृद्ध बनाने हेतु शैक्षिक सफलता के महत्वपूर्ण कारक यानी कि शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। शोध (इलियट 2006; शेरिडन इट. एवं अन्य, 2009) इंगित करते हैं कि ईसीसीई सेटिंग्स में उच्च-गुणवत्ता वाले शैक्षणिक वातावरण को बनाने के लिए बेहतर योग्य शिक्षकों की क्षमता से फर्क पड़ता है। साथ ही, सेवारत शिक्षकों का प्रशिक्षण भी आवश्यक है। प्रबंधकीय कर्मचारियों या पर्यवेक्षकों का नेतृत्व शिक्षकों को एक टीम के रूप में काम करने के लिए प्रेरित व उन्हें एक-दूसरे से अपने अनुभवों को साझा करने और अपने व्यावसायिक विकास के लिए प्रोत्साहित करता है (ओ.ई.सी.डी., 2006)।

© NCERT not to be republished

भारत में ईसीसीई— शिक्षक की तैयारी की वर्तमान स्थिति

इस अवस्था के शिक्षकों व कार्यकर्ताओं की आवश्यकता व महत्व को ध्यान में रखते हुए उनके प्रशिक्षण के लिए देश में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का प्रावधान किया गया है (रेखाचित्र1)।

माध्यमिक शिक्षा पूरी की थी और माध्यमिक स्तर से नीचे स्कूली शिक्षा वाले शिक्षकों की संख्या बहुत कम थी। यह भी पाया गया कि 95 प्रतिशत शिक्षक माध्यमिक स्तर से ऊपर की शैक्षणिक योग्यता रखते थे। आँगनवाड़ियों के मुकाबले, निजी प्री-स्कूलों में लगभग 65 प्रतिशत शिक्षक

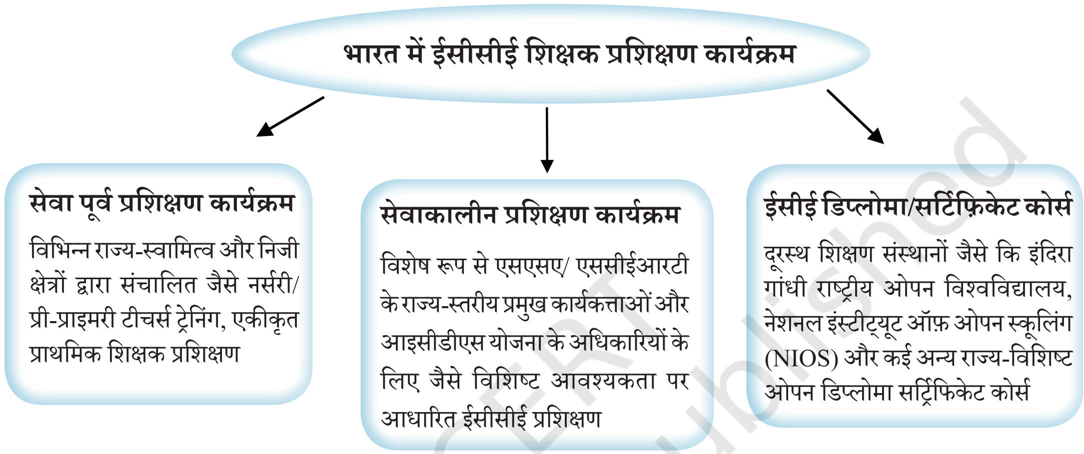

रेखाचित्र 1

हालाँकि, सरकार द्वारा संचालित उपरोक्त कार्यक्रमों के होते हुए भी शिक्षक प्रशिक्षण कमज़ोर पाए गए हैं। कॉल एवं अन्य (2015) द्वारा किया गया एक अध्ययन बताता है कि शैक्षणिक योग्यता तो संतोषजनक है लेकिन शिक्षण प्रशिक्षण में कमी को दूर करने की ज़रूरत है।

इस राह के महत्वपूर्ण मुद्दे

शिक्षा के मूलभूत स्तर पर कार्यबल के प्रशिक्षण व इसकी गुणवत्ता से जुड़े कई मुद्दे हैं, जिनमें प्रमुखता से अग्रलिखित बिंदु शामिल हैं—

- कॉल एव अन्य (2015) के अध्ययन के अनुसार "लगभग सभी श्रेणियों के सभी शिक्षकों ने ग्रेजुएट पाए गए थे, साथ ही कुछ स्नातकोत्तर भी थे। कहने का अर्थ यह है कि शैक्षणिक योग्यता तो संतोषजनक है लेकिन शिक्षण प्रशिक्षण में कमी को दूर करने की ज़रूरत है।"
- देशभर में शिक्षक शिक्षा संस्थानों का असमान वितरण है। यही नहीं कुछ राज्यों, विशेष रूप से उत्तर और उत्तर पूर्व में, शिक्षक शिक्षा संस्थान लगभग न के बराबर हैं। अध्ययन में पाया गया कि ईसीसीई के लिए शिक्षक शिक्षा के नियमन का अभाव है। 63.4 प्रतिशत मान्यता प्राप्त संस्थान भी एन.सी.टी.ई. विनिर्देशों को पूरा नहीं करते हैं (सी.ई.सी.ई.डी., 2013)।

© NCERT not to be republished

- देशभर में प्रारंभिक शिक्षा में प्रशिक्षण संस्थानों की अल्प अवधि में तेज़ी से वृद्धि के परिणामस्वरूप, या तो अयोग्य या अपनी अहर्ता की अधिकता (बी.एड/एम.एड./पी.एच.डी.) वाले शिक्षक इस क्षेत्र में लगे हुए हैं। ऐसे में व्यवसायिक तौर पर शिक्षकों का स्तर गिर गया है और परिणामस्वरूप, प्री-स्कूलों में आयु-उपयुक्त शिक्षा पद्धतियों को अनदेखा किया जाता है।
- आँगनवाड़ी शिक्षकों से अपर्याप्त तैयारी के साथ विविध और चुनौतीपूर्ण सामाजिक-भाषाई संदर्भों में शिक्षा देने की उम्मीद की जाती है। जैसा कि सी.ई.सी.ई.डी. (2013) द्वारा रिपोर्ट किया गया था कि 'ये आँगनवाड़ी केवल पौष्टिक भोजन व स्वास्थ्य योजनाओं को व्यवस्थित करने की जगह की तरह है। यहाँ बच्चों की स्कूल की तैयारी को संतोषजनक तरीके से देखा नहीं गया है।'
- ऐसे प्रशिक्षण संस्थानों की अल्प अवधि में तेज़ी से वृद्धि हुई है जो प्रारंभिक शिक्षा के लिए शिक्षकों को इस कार्यक्रम की अपेक्षाओं को पूरा किए बिना ही प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, एन.सी.टी.ई. ने इस कार्यक्रम के लिए दो साल की अवधि निर्धारित की है, लेकिन एक सर्टिफिकेट प्रोग्राम की अवधि को अलग-अलग संस्थानों में 3 महीने से 2 साल की अवधि तक पाया जा सकता है और डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में यह भिन्न हो सकती है। यही नहीं मान्यता प्राप्त संस्थानों में भी इसकी अवधि एक से दो साल तक अलग-अलग देखी गयी है।
- आँगनवाड़ियों और निजी बुनियादी शिक्षा केंद्रों (प्री-स्कूल) दोनों में अप्रशिक्षित शिक्षकों का मुद्दा आम है। अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन (ईसीई) में उपयुक्त प्रशिक्षण की कमी किसी भी ई.सी.ई. मॉडल की एक सामान्य कमज़ोरी है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के पास एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम है जिसमें प्री-स्कूल संबंधित शिक्षा शामिल है, लेकिन इसके लिए महीने में केवल चार दिन आवंटित किए गए हैं। वही दूसरी तरफ, निजी पूर्व स्कूली (प्री-स्कूल) शिक्षकों के लिए, किसी भी प्रशिक्षण की आवश्यकता ही नहीं है (सी.ई.सी.ई.डी., 2013)। यह सब ईसीई क्षेत्र में पंजीकरण या विनियमन की किसी भी प्रणाली के न होने का परिणाम है।
- ऐसा देखा जा सकता है कि विद्यार्थी प्रशिक्षुओं के पाठ्यक्रम को डिज़ाइन करने में खामियाँ हैं। वे ज़्यादातर ज़मीनी हकीकत से मेल नहीं खाते यानी कि उस संदर्भ में नहीं होते जहाँ इन्हें शिक्षकों के रूप में व्यावसायिक तरीके से काम करना है। नतीजतन, शिक्षकों में ज़्यादातर पूर्व स्कूली बच्चों के लिए सार्थक, आयु-उपयुक्त, विकास केंद्रित व उचित प्रोत्साहन देने वाली गतिविधियों की योजना बनाने और उन्हें व्यवस्थित करने के उपयुक्त तरीकों की कमी होती है।
- आयोजित होने वाले शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम और उन्हें प्रस्तुत करने की कार्यप्रणाली में अंतर है। इसका कारण शिक्षकों का प्रवेशन प्रशिक्षण व उन्मुखीकरण कार्यक्रम न होना और साथ ही पाठ्यक्रम बनाने में उनका शामिल न होना है (सी.ई.सी.ई.डी., 2013)। कक्षाओं में अकसर व्याख्यान पद्धति और ब्लैकबोर्ड शिक्षण की प्रधानता देखी गई है (कॉल एवं अन्य, 2014)।
- शिक्षण में एक शैक्षणिक दृष्टिकोण के रूप में प्ले को एकीकृत करने की अनुचित समझ है। भारत

© NCERT not to be republished

में पाठयक्रम के मानक (जो कि समय-समय पर एन.सी.ई.आर.टी., एन.सी.टी.ई. आदि संगठनों द्वारा तैयार किए गए हैं) है तो सही लेकिन अभी तक वे शायद ही कभी खेल-आधारित शिक्षण गतिविधियों को शामिल कर पाएँ। उदाहरण के लिए, सी.ई.सी.ई.डी. (2013) द्वारा संचालित प्रारंभिक शिक्षा और विकास मानकों की समीक्षा से यह पता चलता है कि केवल एक तिहाई मानकों में खेल आधारित पद्धति के तरीके से सीखने की अवधारणा को अच्छी तरह से एकीकृत किया गया है। यह शिक्षकों में उनके प्रशिक्षण की कमियों को इंगित करते हैं।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्री-स्कूल शिक्षा को शिक्षा के बुनियादी वर्षों की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण देखा जा रहा है। आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को इसके लिए निपुणता से प्रशिक्षित करना अपने आप में एक विशाल कार्य है। ऐसे में प्री-स्कूल शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए ओपन एंड डिस्टेंस एजुकेशन को एक आसान विकल्प समझा जा रहा है। लेकिन वास्तव में इस माध्यम से गुणवत्ता नियंत्रण कर पाना अपने आप में ही संदेहास्पद है।
- अकसर कैस्केड मॉडल द्वारा की जाने वाली ट्रेनिंग से भी गुणवत्ता में कमी दिखी है। इसके अलावा सेवाकालीन प्रशिक्षुओं की प्रशिक्षण संबंधित आवश्यकताओं की पहचान कर पाने की व्यवस्था का भी अभाव है। इसलिए, कई बार प्रशिक्षुओं को सीखने के पर्याप्त अवसर, अनुभव व चुनौती नहीं दी जाती है।
- व्यावसायिक और शैक्षणिक कौशल विकसित करने के लिए अभिविन्यास की कमी के कारण शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिकता शून्य है। लिउ और लिम (2018) ने अपने अध्ययन द्वारा बताया है "व्यावसायिकता शिक्षकों को उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने और अपने शिक्षण करियर की उपयुक्तता को बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह सबसे महत्वपूर्ण है कि पेशेवरों के रूप में शिक्षकों को अध्ययनशील होना चाहिए।" यह निरंतर अभ्यास करने के लिए और शिक्षकों को अपने अर्जित किए हुए ज्ञान को व्यवहार में लाने के लिए आवश्यक है।

आगे की राह

यह स्थापित तथ्य है कि यदि हमारे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम उत्कृष्ट होंगे तो इसका सीधा असर प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता पर पड़ेगा। इस संदर्भ में कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं—

- शिक्षा के मूलभूत वर्षों में गुणवत्ता के परिणामों को बढ़ाने के लिए तीन-स्तरीय रणनीति देखी जा सकती है। सबसे पहले आठ साल की उम्र से छोटे बच्चों के साथ काम करने वाले शिक्षकों की निरंतरता बनाने के लिए मौजूदा शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों को सुधारना ज़रूरी है। दूसरा, प्रभावी पाठ्यक्रमों के माध्यम से ईसीसीई कार्यबल यानी शिक्षकों, पर्यवेक्षकों और प्रशासकों का प्रशिक्षण। अंत में, संबंधित अधिकारियों द्वारा प्रमाणन के लिए मानक तय करना। इसके अलावा, निरंतर व्यावसायिक विकास की ज़रूरत है जिसमें शिक्षक साथी शिक्षकों को देखकर, चिंतन कर और प्रगतिशील अध्यापन-कला को एक-दूसरे से साझा कर सकते हैं।
- स्वायत्त, सोच रखने वाले शिक्षकों के लिए तत्पर रहना चाहिए जो प्रशिक्षण के उच्च मानकों को पूरा करने का जस्बा रखते हों। यह कहना गलत

© NCERT not to be republished

न होगा कि हमें शिक्षकों की प्रशिक्षण शिक्षा के एक ट्रांसेक्शनल मॉडल से अधिक सहयोगी और अनुसंधान पर आधारित मॉडल पर प्रस्थान की आवश्यकता है।

- बच्चे अब प्रायोगिक और सहभागी माध्यमों से सीखते हैं और उन्हें काल्पनिकता, अन्वेषण व संयोजकता की आवश्यकता है। इसलिए, 21 वीं सदी के संदर्भ में ऐसे विद्यार्थियों की ज़रूरतों को देखते हुए शिक्षकों को एक निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाने की तुलना में बहुत अधिक करने की ज़रूरत है। उन्हें कक्षा में ज्ञान आयोजक, निदानकर्ता, प्रेरक, प्रशिक्षक के रूप में सीखने की प्रक्रिया और माहौल को डिज़ाइन करने की आवश्यकता है (डार्लिंग-हैमंड, 2006)।
- प्रारंभिक शिक्षा के शिक्षकों को विषय आधारित (theme-based) पाठ्यक्रम को बनाने व प्राथमिक कक्षा में उन्हें व्यवस्थित करने में निपुण बनाने की आवश्यकता है। यही नहीं पूर्व-सेवा शिक्षण प्रशिक्षण उन्हें प्रारंभिक कक्षाओं के बच्चों के मूल्यांकन के लिए विकास के मानकों पर आधारित तरीकों से भी अवगत कराने में सक्षम होना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में भावी शिक्षकों की व्यक्तिगत वृद्धि के लिए अधिक आत्म-विकास के अवसर शामिल होने चाहिए। ऐसे शिक्षकों के लिए जीविका पथ (career path) बनाया जा सकता है। उन्हें अनुभव और कौशल के आधार पर पुरस्कार और शैक्षणिक क्रेडिट जैसे वित्तीय और गैर-वित्तीय प्रोत्साहन दिए जा सकते हैं। परिणामस्वरूप यह सब कारक शिक्षकों में उत्प्रेरणा उत्पन्न करते हैं। यही इच्छुक, प्रेरित और उत्तरदायी शिक्षक हैं जो प्रभावित कर सकते हैं।
- प्रगतिशील शिक्षक शिक्षा संस्थानों के साथ अंतरराष्ट्रीय विनिमय कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है जो अन्य देशों जैसे फ़िनलैंड में प्रभावी और उन्नत तरीकों से पूर्वस्कूली शिक्षकों को तैयार कर रहे हैं। यह शिक्षकों के साथ-साथ भावी शिक्षकों को भी सबसे अच्छे शिक्षण अधिगम प्रथाओं को अपनाने में मदद करेगा। श्रेष्ठ संस्थानों में अनुदान कार्यक्रमों के लिए मेधावी भावी शिक्षकों और कुशल ईसीसीई शिक्षकों को भेजा जाना चाहिए। इसी तरह, विश्वविद्यालयों को भी शुरुआती अभ्यासों और शिक्षा के सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान के लिए शिक्षा के क्षेत्र से विशेषज्ञों या शिक्षाविदों को आमंत्रित करना चाहिए।
- प्रारंभिक शिक्षा के शिक्षकों या आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को रचनात्मक होना चाहिए ताकि वे नवीन शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित कर सकें। साथ ही ऐसी शिक्षण पद्धतियों का निर्माण कर सकें जो बच्चों को खेल के माध्यम से पनपने में मदद करेगा। छोटे बच्चों को विभिन्न अवधारणाएँ सिखाने के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों को मूल साधनों का उपयोग करना सीखना होगा। साथ ही आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को कक्षा में आई.सी.टी के साधनों का प्रयोग करने के लिए भी उचित प्रशिक्षण देना ज़रूरी है। एक छोटे बच्चे का स्थानीय परिवेश उसके रोज़मर्रा के अनुभवों का चित्रण है और इसलिए पूर्वस्कूली शिक्षकों को एक बच्चे के आत्मसात ज्ञान पर निर्माण करने के लिए शैक्षणिक रणनीतियों को अपनाना चाहिए।
- एक सहयोगी और एक समावेशी सीखने के माहौल को सामुदायिक सहभागिता के साथ बढ़ावा दिया जा सकता है। जहाँ हितधारकों

© NCERT not to be republished

यानी कि भावी शिक्षकों व शिक्षक-प्रशिक्षकों, जो कि विविध शैक्षणिक प्रक्रियाओं से अच्छी तरह वाकिफ़ हो, को शामिल किया जा सकता है। उन्हें पता होना चाहिए कि विकास संबंधी उपयुक्त गतिविधियों के बारे में माता-पिता के साथ संवाद और उनका मार्गदर्शन कैसे करें। इस प्रकार, शिक्षक कार्यक्रमों में हितधारकों को अपनी भूमिकाओं को फिर से समझना होगा।

- अकसर आँगनवाड़ी शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता अलग-अलग देखी गई है। यदि उनके लिए शिक्षण प्रशिक्षण को सार्थक बनाना है तो आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को उनकी शैक्षिक योग्यता के हिसाब से वर्गीकृत कर उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था करने की आवश्यकता है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।
- प्रारंभिक शिक्षा आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की देखरेख में होगी ऐसे में उनका सेवाकालीन प्रशिक्षण भी ज़रूरी है। यह शिक्षक प्रशिक्षण आमने-सामने और जहाँ तक आवश्यक हो ऑनलाइन दूरस्थ शिक्षा का प्रयोग कर किया जा सकता है। इसके लिए सैंडविच मॉडल व पार्ट-टाइम ट्रेनिंग जैसे विकल्पों को भी चुना जा सकता है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने ईसीसीई को स्कूली शिक्षा की नींव माना है। ऐसे में शिक्षक शिक्षा एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखने तथा इसकी पूर्व-सेवा और सेवाकलीन घटक को अविभाज्य मानना महत्वपूर्ण हैं।

विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा के वर्षों में प्रशिक्षण को गुणवत्ता शिक्षण अधिगम के लिए महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जाता है। जिसका भाव आजीवन भर उत्साह से अपने व्यवसाय को विकसित करने का प्रयास करने, निरंतर सीखने और इसके लिए जवाबदेही में निहित है। पूर्व-सेवा के दौरान व्यावसायिक शिक्षा, इस क्षेत्र के अनुभव और निरंतर शिक्षा के नए आयामों से जुड़े रहना एक ऐसी तिकड़ी का गठन करते हैं जो एक शिक्षक को "सशक्त व्यवसायी" बनाने के लिए आवश्यक है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

एल्लिओट, ए. 2006. अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन— पाथवेस टू क्वालिटी एंड इक्विटी फ़ॉर आल चिल्ड्रन. *ऑस्ट्रेलियाई एजुकेशन रिव्यू,* वॉल्यूम 50, ऑस्ट्रेलियाई कौंसिल फ़ॉर एजुकेशनल रिसर्च.

ओ.ई.सी.डी., 2006. *स्टार्टिंग स्ट्रांग II— अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन एंड केयर.* ऑथर पेरिस.

कॉल,वी. चौधरी और अन्य. 2014. *क्वालिटी एंड डाइवर्सिटी इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन.* अंबेडकर यूनिवर्सिटी, दिल्ली. www.iceceiexecutive-summaryreport.pdf.

डार्लिंग-हम्मोंड, एल. 2006. *पॉवरफुल टीचर एजुकेशन—लेसंस फ्रॉम एक्सेम्पलरी प्रोग्राम्स.* सन फ्रांसिस्को, सी ए: जोसेय-बास.

डिपार्टमेंट ऑफ़ हेल्थ एंड चिल्ड्रन. 2000. द *नेशनल चिल्ड्रनस स्ट्रेटेजी— आवर चिल्ड्रन-दिअर लाइफ़्स.* डबलिन: द स्टेशनरी ऑफिस.

डीआज़-रीको,एल. 2009. *टीचिंग इंग्लिश लर्नर्स.* पिअरसन. यूएसए

नेशनल एजुकेशन पॉलिसी. 2020. http://www.mhrd.gov.in/sitesupload_files/mhrd/files/nep/NEP_final_English.pdf reffered on 11/02/2021 पर देखा गया।

फ़ेम, एम. 2014. एजुकेशनल इम्प्लिकेशन्स ऑफ़ सोशल लर्निंग थ्योरी. https://www.academia.edu

मॉस, पी. 2006 . स्ट्रक्चर्स, अंडरस्टैंडिंग एंड डिस्कोर्सेस: पॉसिबिलिटीज फॉर री-एनविशनिंग द अर्ली चाइल्डहुड वर्कर. *कंटेम्परी इश्यूज़ इन अर्ली चाइल्डहुड*. वॉल्यूम 7. अंक. 1 , पृष्ठ 30–41।

रा.शै.अ.प्र.प. 2018. *नेशनल अचीवमेंट सर्वे*. एजुकेशनल सर्वे डिवीज़न. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली.

लिउ, डब्लू.सी., और वाई.सी. लिम. 2018. *अंडरस्टैंडिंग टीचिंग, लर्निंग एंड लर्नर्स— द सिंगापुर टीचिंग प्रैक्टिस*. डब्लू.सी लिउ ,सी. कोह, ड. चोय, और जे. टय-लिम (संपादक), *अंडरस्टैंडिंग टीचिंग, लर्निंग एंड लर्नर्स: ए गाइड फॉर सिंगापुर टीचर्स*. पृष्ठ 1–23. सिंगापुर: सेंगे लेअरंङ्ग एशिया.

वूलफ़ॉक, ए. 2008. कॉग्निटिव डेवलपमेंट एंड लैंग्वेज. *एजुकेशनल साइकोलॉजी*. पृष्ठ. 78–84. पिअरसन एजुकेशन दिल्ली.

सेंटर फ़ॉर अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन एंड डेवलपमेंट. 2013. *प्रीपेरिंग टीचर्स फ़ॉर अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन*, अंबेडकर यूनिवर्सिटी दिल्ली एंड नेशनल कौंसिल फ़ॉर टीचर एजुकेशन, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished